दिनेश शर्मा जैसे दोस्त हों, तो जिन्दगी में भीड़ बेवजह

Written by कुमार सौवीर
Friday, 23 March 2018 08:08

: उप मुख्यमंत्री डॉ दिनेश शर्मा जैसे मित्रों ने जो मुझे सम्बल दिया, वह बेमिसाल : मित्रता का मूल्यांकन भौतिक अपेक्षाओं से होगा, फिर तो वह सौदेबाजी होगी : कई लोग आज भी चाहते हैं कि कुमार सौवीर अपने कुमारसौवीरपना यथावत, सुरक्षित और स्वस्थ बना ही रहे : साशा की शादी के किस्से -तीन :

कुमार सौवीर

लखनऊ : मेरी बेटी, यानी साशा सौवीर के पाणिग्रहण समारोह में भारी मित्र-बंधु-बांधव जुटे। न कोई औपचारिकता और न ही कोई हिचकिच। हालांकि इस विवाह कार्यक्रम के आयोजन में कई मित्र जुटे थे मेरा सहयोग करने के लिए। जिससे जो भी हो सकता था, उसने तत्काल पूरा किया। जोधपुर के पाली-मारवाड़ तक से ओम टाक से मैंने कहा कि सोजत की मेंहदी चाहिए। तीन दिन के भीतर ही विश्व विख्यात सोजत की पांच किलो मेंहदी और उसके दो दर्जन कोन केरियर से आ गये। यह स्नेह का रिश्ता है, वरना सन-03 में ही मैंने पाली-मारवाड़ छोड़ दिया था। लेकिन रिश्तों की गर्माहट 15 बरस के बाद भी जस की तस थी।

बहरहाल, विवाह में मैंने जिसे बुलाया, वह आया। कुछ लोगों को छोड़ कर। हां, तो जिसे नहीं बुला पाया, वह भी पहुंच गया, बेहिचक आया। लेकिन जिस तरह डॉक्टर दिनेश शर्मा ने साशा के विवाह में अपनी भागीदारी निभाई, वह किसी भी मित्र के लिए सर्वोच्च गर्व का विषय बन सकती है। दिनेश शर्मा भले ही आज यूपी के उप मुख्यमंत्री हों, लेकिन मेरा उनसे रिश्ता खासा गहरा है। लोगों के लिए विस्मयकारी हो सकता है। लेकिन जिस तरह जीवन के एक-एक लम्हों को हम दोनों ने जिया है, वे मेरे लिए बेमिसाल रहे हैं। स्नेह की डोर की ताकत ही तो है यह, कि डॉ दिनेश शर्मा ने 20 फरवरी को अपने पूर्व-निर्धारित गोरखपुर के अपने दौरे को जैसे-तैसे निपटाया, और सीधे शादी के मण्डप पर पहुंच गये। समय से। उस वक्त द्वारचार की तैयारी चल रही थी।

1 / 2

दिनेश शर्मा जैसे दोस्त हों , तो जिन्दगी में भीड़ बेवजह

Written by कुमार सौवीर
Friday, 23 March 2018 08:08

[illegible]

2 / 2